B.A Part - 1 (H) Philosophy

S/o अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

Date / /
Page

बौद्ध-दर्शन का तृतीय-आर्य सत्य की विवेचना करें?

Ans:- बौद्ध दर्शन में दुःख है, दुःख का कारण है, दुःख की निवृत्ति भी है। यानि द्वितीय आर्य सत्य में बुद्ध ने बतलाया है कि दुःख का कारण है। अतः दुःख के कारण का अंत होने पर दुःख का भी अंत अनिवार्यतः हो जाती है। बुद्ध ने तृतीय आर्य सत्य में दुःख-निरोध का वर्णन किया है। दुःख-निरोध को निर्वाण भी कहते हैं तथा इसकी प्राप्ति जीवन काल में भी हो सकती है। यदि कोई व्यक्ति राग-द्वेषों पर विजय प्राप्त कर शुद्ध आचरण के द्वारा बुद्ध के चार आर्य सत्यों का निरन्तर ध्यान करता है तथा समाधि के द्वारा प्रज्ञा को प्राप्त कर लेता है तो उस व्यक्ति का चित्त लोभ, मोह एवं राग-द्वेष से मुक्त हो जाता है। उस व्यक्ति की किसी वस्तु की तृष्णा नहीं रह जाती है तथा वह मुक्त हो जाता है। मोक्ष को यहाँ निर्वाण की संज्ञा से विभूषित किया गया है तथा मोक्ष प्राप्त व्यक्ति को अर्हत् कहते हैं। निर्वाण राग-द्वेष एवं तज्जन्य दुःख के नाश की अवस्था है। निर्वाण-निर्वाण निष्क्रियता की अवस्था नहीं है। यह सत्य है कि आर्य-सत्यों के सम्यक् ज्ञान के लिए मन को बाह्य वस्तुओं से तथा आन्तरिक भावों से विलग करना होता है एवं आर्य सत्यों पर उसे केन्द्रित कर उनके संबंध में निरन्तर चिन्तन एवं मनन करना पड़ता है। जब एक बार समाधि के द्वारा स्थायी रूप से प्रज्ञा की प्राप्ति हो जाती है तब साधक को हमेशा समाधि में रहने की आवश्यकता भी नहीं होती है और न ही उसे जीवन के कर्मों में विरत रहने की आवश्यकता होती है। इसके विपरीत निर्वाण प्राप्त व्यक्ति लोक-कल्याण की भावना से प्रेरित होकर क्रियाशील रहता है। महात्मा बुद्ध भी निर्वाण प्राप्ति के पश्चात क्रियाशील रहकर परिभ्रमण धर्म-प्रचार, संघ की स्थापना इत्यादि में रत रहे तथा उनका जीवन सदैव कर्मशील रहा है। इसलिए, निर्वाण का अर्थ कर्म-संन्यास अथवा निष्क्रियता नहीं है। निर्वाण का स्वरूप अनिर्वचनीय है। इसके स्वरूप का सही-सही वर्णन करने में तर्क एवं विचार सर्वथा असमर्थ है।

निर्वाण प्राप्ति से तीन लाभ हैं:-

(i) मनुष्य के सभी दुःखों का अंत हो जाता है।

(ii) पुनर्जन्म की संभावना समाप्त हो जाती है।

(iii) निर्वाण प्राप्ति व्यक्ति का बाकी जीवन शांति से व्यतीत होता है।

—X—